मनुष्य परमात्मा की श्रेष्ठ रचना है। क्योंकि उनमें बुद्धि का होना सर्व प्राणियों से अलग पहचान बनाता है। अरस्तू ने लिखा था कि मनुष्य एक उद्देश्यपूर्ण प्राणी है, जिसका अर्थ यह है कि हम लक्ष्य या उद्देश्य पूर्ण प्राणी है। जिसका अर्थ यह है कि हम लक्ष्य या उद्देश्य से प्रेरित होते हैं। इसलिए जब आपके पास कोई स्पष्ट लक्ष्य होता है और आपकी दिशा में हर दिन काम करते हैं, तो आप खुश रहते हैं और अपने जीवन को नियंत्रण में महसूस करते हैं। इसका यह अर्थ भी है कि आजीवन लक्ष्य तय करना एक बहुत ही महत्वपूर्ण अनुशासन है।

प्रकृति की ओर देखें पालतू कबूतर एक उल्लेखनीय पक्षी है। इसमें अतिइन्द्रिय क्षमता होती है कि आप इसे इसके बसेरे से कितनी भी दूर ले जाएं किसी भी दिशा में ले जाए, यह दोबारा उड़कर अपने घर पहुंच सकता है। किसी पालतु कबूतर को इसके बसेरे से निकालकर एक पिंजरे में रख दें, पिंजरे पर कंबल ढंककर एक बक्से में रखें और फिर बक्से को एक बंद ट्रक में रख दें। फिर किसी भी दिशा में हजार मील दूर चले जाएं और इसके बाद ट्रक से बक्सा बाहर निकालें और कंबल हटाकर कबूतर को पिंजरे से बाहर निकालें।

पालतू कबूतर फौरना हवा में उड़ेगा, तीन चक्कर लगायेगा और फिर बिना किसी गलती के एक हजार मील दूर स्थित अपने बसेरे की ओर उड़ने लगेगा। दूनिया में यह इकलौता पक्षी है, जिसमें यह क्षमता है - सिवाय इंसान के, सिवाय आपके।

अपने लिए स्पष्ट लक्ष्य बनाएं और अनुशासित होकर एक दिन उनकी जीत सुनिश्चित करती है, उतनी कोई दूसरी चीज नहीं कर सकती। जीवन में सार्थक चीजें प्राप्त करने के लिए लक्ष्य बनाना अनिवार्य है। आपने शायद यह बात सूनी होगी, ''आप उस निशाने पर तीर नहीं मार सकते, जो आपको दिखता ही न हो।''

चौराहे पर खड़ें हों - यदि आप यही नहीं जानते कि आपको कहां जाना है, तो कोई भी सड़क आपको वहां पहुंचा देगी। एक विचारक ने कहा था - ''आप हर वो निशाना चूक जाते हैं, जिसे आप नहीं लगाते।'' आप जीवन के हर क्षेत्र में सचमूच क्या चाहते हैं, यह तय करने भर के काम से ही आपकी जिंदगी पूरी तरह बदल सकती है।

आज संसार में केवल तीन प्रतिशत लोग ही लिखित लक्ष्य और योजनाएं होती हैं। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि ये तीन प्रतिशत लोग इतना कमा लेते हैं, जितना बाकी के 97 प्रतिशत लोग मिलकर भी नहीं कमा पाते।

ऐसा क्यों है? कारण स्पष्ट है। यदि हमारे पास एक स्पष्ट लक्ष्य और

लक्ष्य में दृढ़ता लायें

-ब्र.कु.गंगाधर

उसे प्राप्त करने की योजना है, तो आपके पास एक निश्चित मार्ग होता है, जिस पर आप हर दिन दौड़ सकते हैं। तब बाधाओं और प्रलोभनों के कारण आप राह नहीं बदलते हैं। आपके पास एक निश्चित मार्ग है। इसलिए हम न भटकते हैं, न किसी दूसरी दिशा में जाते हैं। अपना अधिकांश समय बिल्कुल सीधी लकीर में केंद्रित करते हैं। जहां हम हैं, वहां से अपने लक्ष्य तक पहुंचने के सबसे सीधे मार्ग पर चलने में। इसी वजह से लक्ष्य लिखने वाले लोग लक्ष्यविहिन लोगों से इतना ज्यादा प्राप्त कर पाते हैं।

यह बड़ी बिडम्बना है कि ज्यादातर लोगों को यह गलतफहमी रहती है कि उनके पास पहले से ही लक्ष्य है, जबकि वास्तव में उनके पास सिर्फ आशाएं और इच्छाएं होती हैं,, याद रखें, आशा रखने मात्र से ही सफलता नहीं मिलती है और इच्छा को इस तरह परिभाषित किया गया है, ''एक ऐसा लक्ष्य, जिसके पीछे कोई ऊर्जा नहीं है।''

जो लक्ष्य लिखे नहीं जाते और योजनाओं में नहीं बदल पाते, वे बिना बारूद वाले कारतूसों की तरह होते हैं। अलिखित लक्ष्यों वाले लोग खाली कारतूस चलाते हुए जिंदगी गुजार देते हैं। चूंकि उन्हें यह गलतफहमी रहती है कि उनके पास लक्ष्य पहले से ही है, इसलिए वे लक्ष्य निर्धारण का मुश्किल और अनुसासित कार्य कभी नहीं करते हैं - जबकि यह सफलता की सबसे बड़ी योग्यता है।

सफलता के अवसर को बढ़ाएं - 2006 में यू.एस.ए. टूडे ने एक अध्ययन के बारे में लेख प्रकाशित किया। इसमें शोधकर्ताओं ने नए साल का संकल्प लेने वाले लोगों को दो श्रेणियों में विभाजित किया, एक जिन्होंने नए साल के संकल्प लेकर उन्हें लिख लिया था। दूसरे, जिन्होंने नए साल के संकल्प लिए तो थे, लेकिन उन्हें लिखा नहीं था।

सालभर बाद उन्होंने उन लोगों को दोबारा सर्वेक्षण किया। उन्हें जो तथ्य पता चला, वह बहुत आश्चर्यजनक था। जिन लोगों ने नए साल के संकल्प लिए तो थे, लेकिन लिखे नहीं थे, उनमें से केवल 4 प्रतिशत ही उन्हें

-शेष पृष्ठ 4 पर

मास्टर सर्वशक्तिवान बनना है तो साधनों को यूज करते, साधना को न भूलें

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

हम आत्मायें बाबा के घर में बैठे हैं, बाबा का घर सो मेरा घर। हमारा घर सो बाबा का घर, बाबा के घर में बैठे हैं... सदा ही यह भान रहे कि मैं बाबा के घर में बैठी हूँ। अभिमान न हो। जहां भी जायेंगे जहां भी पांव पड़ेंगे वो भी बाबा का घर हो जायेगा। हमको कोई अपना घर है नहीं, पराये घर में रहते हैं। दुनिया है पराई, पराई से क्या प्रीत! जो अपना मिला है वह ऐसा मिला है, स्वर्ग की बादशाही पीछे मिलेगी पर अभी हम बादशाह बन गये हैं और उस स्वर्ग की बादशाही में नम्बरवार होंगे, अभी हम सभी नम्बरवन हो सकते हैं, इतनी खुली छुट्टी है। भगवान की पढ़ाई ऐसी है जो आज का आया हुआ भी इस पढ़ाई में नम्बरवन में जा सकता है, वण्डर है यह। ऐसा मेरा भाग्यविधाता बाप, तो हमें नशा है - शिवबाबा है वरदाता, ब्रह्मा बाबा है भाग्यविधाता। उसके सिवाए और कोई याद आता ही नहीं है।

किसी में जरा भी कोई इतना भी सेन्सेटिव नेचर न रहे, इतने सेन्सीबुल हो, समझदार हो। अभी ऐसी शक्तियां हो जो आठों शक्तियां प्रैक्टिकल में दिखाई पड़ें। कोई एक भी शक्ति कम न हो। अगर किसी को भी मास्टर सर्वशक्तिवान बनना है तो साधनों को यूज करते, साधना को न भूलें। साधना क्या है? जैसे शिवबाबा इतना काम करके भी कहता है मैं निष्कामी हूँ। ऐसे सदा निष्कामी रहूं। मैं कुछ भी नहीं करती, जरा भी कर्तापन का अभिमान न हो। करनकरावनहार स्वामी ने करा लिया। समय की पहचान, बाप की पहचान, स्वयं की पहचान को अभी आँख खोल करके पहचानों। बाबा ने अन्धों को आँख दिया है और किसी को न देख अपने आपको देखो। कॉमनसेन्स से काम लेने का अक्ल सीखो। ऐसे नहीं जो आया सो किया या जो बात सुबह को हुई वही अभी तक बार-बार रिपीट करते रहें, नहीं। जो बोलते हो वो सोच समझके नहीं बोलते तो वो नॉनसेन्स ठहरे इसलिए पास्ट इज पास्ट कर प्रेजेन्ट में रहो, तो बाबा की शक्ति बहुत आयेगी। देखो, इतनी बूढ़ी हूँ पर मैं सब कुछ खा सकती हूँ, ऐसे चलाने वाला चला रहा है, खिलाने वाला खिला रहा है। ऐसा जादू जो सबको लगे क्योंकि मैं आई ही हूँ जादू लगाने के लिए। सिर्फ मनुष्य रियलाइज करे 'हू एम आई?' हू इज गॉड? बाप कौन है, मैं कौन हूँ? फिर बाबा जो सिखाता है वही अच्छा लगता है। तो बाबा जो कहता है वही करो, बेफिकर बादशाह रहो क्योंकि बाबा ने बेगमपुर में रहने की सीट दी है। मेरा बाबा बेहद का बाबा है, यह बाबा की बहुत पुरानी बात है। साकार बाबा कभी भी हद की बातें न सोचता, न सुनता, न बोलता। बाबा को हद की बातें सुनाने की किसी में ताकत भी नहीं होती थी। बाबा कहता है ओ मेरे मीत, मेरे गीत तुमको बुलाते हैं। यहां किसके मीत नहीं बनना, पर मेरे मीत बनकर रहना। ऐसे वण्डरफुल बाबा को देख घड़ी-घड़ी यह वण्डरफुल शब्द निकलता रहता है। बाबा की यह प्रेरणा है, अभी भी समय है, ज्ञान इतना सत्य है, बाबा इतना सत्य है, बच्चे भी मेरे इतने बच्चे बन जायें तो दुनिया से झूठ खत्म हो जाये। तो बाबा गिनती कर रहा है, देख रहा है, मेरे सच्चे बच्चे ऐसे निकलें जो दुनिया से झूठ खत्म हो जाये। पुरुषार्थी जीवन में परीक्षायें तो जरूर आयेंगी, पर सच में परीक्षाओं से पार कर दिया। बाबा हमको टेंशन फ्री बनाता है। सच यह है कि पास्ट इज पास्ट... प्रजेन्ट में रहना है, बाबा को साथी बनाना है, साक्षी हो करके पार्ट प्ले करना है तो पास हो जाते हैं, तो इजी है ना। तब फिर बाबा प्रेजन्ट माना गिफ्ट देता है कि कोई बात आयेगी तो बाबा कहेगा - बच्ची, ख्याल मत करना, पास हो जायेगी, कल्प पहले भी पास हुए थे। तो बाबा अभी इतना अच्छा बना रहा है जो अंतिम जन्म में भी हमको जल्दी अपना बनाता है, हम भी बन जाते हैं। साइलेंस से हमारी रूह में जो शक्ति भरी है, अंतिम जन्म में भी वो शक्ति सफलता दिलाने में छमछम करके काम कर रही है, जो संकल्प करो वो सेकेण्ड में साकार हो जाता है, तो दूसरा संकल्प आता नहीं। कर्म करना नहीं आता पर यह करो, कहने से कर लेवें... परन्तु कोई इस बात को सतोगुणी बुद्धि से अच्छी तरह से उठाता है, उसको समझ में आता है। करने का भी जी चाहता है। तो प्लीज मैं अभी आपको जिस भावना से कहती हूँ आप भी उसी भावना से स्वीकार करो, बाबा के नूरे रत्न बन जाओ। ज्ञान का मंथन करो तो माला में आ जायेंगे, ज्ञान का सिमरण करो तो सिमरणी में आ जायेंगे।

लाइट-माइट सम्पन्न बनने के लिए स्मृति स्वरूप बनो

दादी हृदयमोहिनी, अति.मुख्य प्रशासिका

मैं सर्वशक्तिवान बाप का बच्चा मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, यह स्मृति ही किरणें बन जाती हैं। तो चेक करना है कि आत्मा लाइट तो है लेकिन उसमें सर्वशक्तियों की माइट कितनी आई है? तो ज्वालामुखी योग में लाइट माइट दोनों प्रत्यक्ष स्वरूप में होती है। सिर्फ सर्वशक्तिवान की बच्ची हूँ यह नहीं, लेकिन वह मेरा स्वरूप है। स्मृति में रहने से स्वरूप बन जायेगा। फिर हमारी शक्ल आटोमेटिकली चेंज हो जायेगी और जो हमें देखेगा वह अनुभव करेगा कि इनकी किरणों द्वारा मुझे शक्ति मिल रही है। योग में कभी बाबा से मिलन भी होता है, कभी रूहरिहान होती है, कभी दिल का हालचाल सुनाते हैं लेकिन ज्वालामुखी योग का अर्थ है लाइट माइट स्वरूप होकर मैं उस स्मृति स्वरूप में बैठूं। अमृतवेले तो ऐसा योग होना ही चाहिए, जितना ज्वालामुखी योग जमा होगा उतना यह चेहरा और चलन सेवा करेगी।

अभी समय ऐसा आ रहा है, जब चारों ओर हलचल बढ़ेगी इसलिए बाबा कहता है अभी से आप अभ्यास करो, समय जितना नजदीक आयेगा तो कोई को 7 दिन का कोर्स करने का भी समय नहीं मिलेगा। उस समय चेहरे वा चलन द्वारा अथवा मंसा द्वारा ही सेवा करनी होगी क्योंकि अभी धर्म के साथ हम राज्य भी स्थापन कर रहे हैं और राज्य में तो सब चाहिए। इसके लिए बाबा कहते हैं अभी ज्वालामुखी योग करो तो आपकी शक्ल से लगे, चेहरे पर वह झलक दिखाई दे। हमारे अंदर लाइट माइट की जो शक्ति है वह हमारी शक्ल बताये। जैसे ब्रह्मा बाबा के चित्र को ही देखो, कितनी लाइट माइट अनुभव होती है। कईयों ने बाबा को साकार में नहीं देखा है फिर भी कहते हैं हमने बुद्धि की आँख से बाबा को देखा है, जाना है। तो बाबा यही चाहता है कि मेरा एक-एक बच्चा अभी दूसरी बातों को छोड़कर, ज्वालामुखी योग में रहे। फिर कहने की जरूरत नहीं पड़ेगी, शक्ल सब काम आपेही करा लेगी। इस योग द्वारा मंसा सेवा बहुत अच्छी हो सकती है। इसके लिए हर एक को सवेरे-सवेरे अपने मन की दिनचर्या बनानी चाहिए। मन का टाइमटेबल जरूर बनाओ क्योंकि मन को बिजी रखना है, नहीं तो व्यर्थ जरूर आयेगा। साथ-साथ हर घण्टे 5 मिनट योग के लिए निकालो। अगर हर घण्टे 5 मिनट निकालेंगे तो कोई भी काम करते उसका प्रभाव पड़ेगा।

लाइट-माइट सम्पन्न बनने के लिए कोई न कोई शक्ति अपने मन में रखो, आज हमको सहनशक्ति के ऊपर अटेन्शन देना है, आज निर्णय शक्ति पर अटेंशन देना है... ऐसे सारा दिन बीच-बीच में अटेंशन दो फिर रात को सोने के पहले बाबा को सारे दिन का समाचार सुनाओ। इसमें अलबेले नहीं बनो। ऐसे नहीं हमने आज बहुत हार्ड वर्क किया इसलिए नींद आ गई। सारे दिन में कुछ व्यर्थ भी चलता है, कभी कोई गलती भी हो जाती है, तो रात में सोने के पहले बाबा को सुनाकर माफी ले लो। धर्मराजपुरी की कड़ी सजाओं से बचने के लिए यह बहुत अच्छी विधि है क्योंकि अभी वह बाप के रूप में है। फिर धर्मराज तो आफीशल हो जायेगा। अभी बाबा रहमदिल है, कोई गलती हो गई तो सारा समाचार बाबा को देने से, गलती माफ कराने से बुद्धि खाली हो जाती है। फिर नींद भी बहुत अच्छी आयेगी। इधर-उधर के स्वप्न भी नहीं आयेंगे। दो घण्टे की नींद भी 4 घण्टे का अनुभव करायेगी। तो ऐसे अपनी दिनचर्या ठीक रखेंगे, बुद्धि को खाली रखेंगे तो ज्वालामुखी योग हो सकेगा। नहीं तो अगर कोई कमी होगी तो वह अपनी ओर खींचेंगी। कोई भूल हो गई तो वही बार-बार याद आयेगी। पुरुषार्थी को वह बात मन में जरूर खायेगी।